بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 09.09.16 बैतुस्सुबूह, फ्रेंक फ़र्ट, जर्मनी।

किसी भी प्रकार की हीन भावना में लिप्त हुए बिना अपनी शिक्षा के छोटे से छोटे भाग के अनुसार भी कर्म करें तथा उन लोगों को बताएँ कि यूरोप में आकर भी हमें इस्लाम की शिक्षा की उत्तमता के संदर्भ में तनिक सा भी कोई सन्देह नहीं है। इसी प्रकार लड़कियाँ अपने वस्त्रों तथा अपने पर्दे का भी ध्यान रक्खें और अपनी लज्जा एंव अपनी पवित्रता पर कोई आँच न आने दें। लजना का संगठन इस ओर विशेष ध्यान दे। इसी प्रकार ख़ुद्दामुल अहमदिया का संगठन भी ख़ुद्दाम के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दे। अन्सारुल्लाह को भी अपने दायित्वों से ग़फ़िल नहीं होना चाहिए। समस्त संगठन तथा जमाअती निज़ाम जमाअत के लोगों की क्रिया शील दुर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए अपने अपने तर्बियती प्रोग्राम बनाएँ तथा इसके उत्तम परणिाम प्राप्त करने का प्रयास करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला की कृपा से जर्मनी की अहमदिया जमाअत का जलसा सालाना पिछले रविवार को अपने तीन दिन के सम्पूर्ण प्राग्रामों के पश्चात समापन को पहुंचा। समस्त कार्य-कर्ता हमारे धन्यवाद के पात्र हैं अल्लाह तआला उनको प्रतिफल प्रदान करे। मैं भी इन सब काम करने वालों को धन्यवाद देता हूँ। अल्लाह तआला इन लोगों को भविष्य में पहले से बढ़कर सेवा करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

जलसे में, ग़ैरों पर जो जलसे का प्रभाव हुआ उनमें से कुछ वृत्तांत पेश करता हूँ। बोसनिया से आने वाले एक मेहमान अब्राहीमो साहब कहते हैं कि अहमदियत ही वास्तविक सत्यता है जो क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षानुसार कर्म करती है। मुझ पर सर्वाधिक प्रभाव ख़लीफ़तुल मसीह के ख़ुत्बों तथा सम्बोधनों का हुआ। कहते हैं कि मेरा दिल हर एक दृष्टि से संतुष्ट हुआ और मैं बैअत करके अहमदियत में दाख़िल हो गया। मुझे आप लोगों के संगठन, प्रेम तथा अमन ने अपना दीवाना बना लिया है।

ईराक़ के एक दोस्त रियाज़ साहब कहते हैं कि जलसा सालाना का दृश्य मेरे लिए अत्यंत आश्चर्य जनक था। सद्व्यवहार और भाईचारे का यह वातावरण मेरे विचार से दुनया में अहमदियत के अतिरिक्त कहीं दिखाई नहीं देता। कहते हैं- मुझे चारों ओर प्रेम ही प्रेम दिखाई दिया तथा ख़लीफ़ः के सम्बोधन दिल की भावनाओं को चित्रित करते हैं मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि विश्व में यह इस्लाम का ऐसा अत्यंत सुन्दर चित्र किसी अन्य सम्प्रदाय के पास नहीं है इस लिए सब कुछ आँखों से देखने के पश्चात मुझे और मेरे परिवार को अहमदियत क़बूल करने में तनिक भी संकोच नहीं हुआ तथा वापस आकर जब हमने अपने रिश्तेदारों को यह सब कुछ बताया कि हमने अहमदियत क़बूल कर ली है तो वे कहने लगे कि आप लोगों ने हमें क्यूँ नहीं बताया, हमें क्यूँ साथ लेकर नहीं गए, हम भी ये सारी बातें सुनकर जमाअत में शामिल होना चाहते हैं।

एक दोस्त सलमान साहब कहते हैं- जलसे के वातावरण ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। ऐसा सुसंगठित समागम मैंने जीवन में पहले कभी नहीं देखा। लोगों का शिष्टाचार, उनका सुन्दर व्यवहार तथा प्यार मुहब्बत का माहौल, ये सारी चीज़ें आजकल दुनया में अहमदियत के अतिरिक्त कहीं और नज़र नहीं आतीं और इन्हीं चीज़ों को देखकर मैं आज अहमदियः जमाअत में शामिल होने की घोषणा करता हूँ।

बोसनिया के एक मेहमान बायरन साहब कहते हैं- पहली बार जलसा सालाना में शामिल हुआ। यह जमाअत सच्ची

जमाअत है जो सिरात-ए-मुस्तक़ीम (सत्य-मार्ग) पर क़ायम है। जलसे पर जब मैंने वर्तमान ख़लीफ़ः की बातें सुनीं तो मैंने उनके हाथ पर बैअत करने का निश्चय कर लिया और बैअत करके अहमदियः जमाअत में शामिल हो गया।

बैल्जियम से आने वाले एक मेहमान ग़रिओ साहब कहते हैं- मैं समस्त मुसलमानों से कहूँगा कि यही दीन-ए-इस्लाम है तथा इस इस्लाम अहमदियत में दाख़िल हो जाएँ। मेरे लिए विश्वास करना कठिन है कि मैं आज बैअत करने के लिए एक ख़लीफ़ः के सामने उपस्थित हूँ। चौदह वर्ष की आयु से मुझे याद है कि मैं मौलवियों से हदीसें सुनता था कि प्रतीक्षित मेहदी आंएगे। आज मेरी वह इच्छा पूरी हो गई, मैंने वह सब कुछ अपनी आँखों से देख लिया।

मैसीडोनिया के एक ईसाई दोस्त टोनी साहब, जो पत्रकार हैं, कहते हैं- मेरी आयु बावन वर्ष है मैंने अपने जीवन में इस प्रकार का सुसंगठिन आयोजन नहीं देखा। जलसे की व्यवस्था में मैंने कोई कमी नहीं देखी। न यू.के. में न यहाँ। पत्रकार बड़ी पैनी दृष्टि से देखते हैं परन्तु यह अहमदियत की सुन्दरता है कि हर स्थान पर उनको एक सी बात नज़र आई।

एक ग़ैर अहमदी मुसलमान पत्रकार हैं सीनाद साहब, कहते हैं कि जलसा सालाना की व्यवस्था से में बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। पहली बार मैंने देखा कि एक ही स्थान पर इतने अधिक लोग एकत्र हैं सभी सभ्य लोग हैं, किसी के चेहरे पर क्रोध अथवा घृणा का कोई प्रभाव नहीं था। ख़लीफ़ः के सम्बोधन बड़े प्रभावकारी थे जो सब पर प्रभाव डाल रहे थे। उनके भाषण लोगों के दिलों तक पहुंच रहे थे। मेरे साथ एक दोस्त भी आए हुए थे जो ईसाई हैं। जलसे के प्रारम्भ से ही वह इतना प्रभावित हुए कि (अभिव्यक्ति के लिए) शब्द नहीं हैं।

बोसनिया के एक दोस्त डाक्टर आदिल कहते हैं कि जलसे के समस्त प्रबन्ध तथा प्रोग्राम अपने आप में विशेष थे। कहते हैं- इस्लाम का आधार, आज्ञा पालन और अनुशासन पर है और यही बात यहाँ मुझे जलसे में नज़र आई।

एक मेहमान दानियाल साहब हैं, कहते हैं कि यह जलसा हज़ारों रूहानी मुर्दों को जीवन देने वाला था तथा इन आध्यात्मिक मृतकों में से एक मैं भी हूँ जिसे जलसे में शामिल होकर नए सिरे से रूहानी जीवन प्राप्त हुआ।

बोसनिया से एक ग़ैर अज़-जमाअत नूरिया साहब कहते हैं कि जलसे में शामिल होने के बाद मेरे दिल में एक विचित्र अनुभूति हुई जो कि बयान से बाहर है, मैं भीतर से बदल चुका हूँ।

रोमानिया से एक नौ-मुबाय फ़लोरियान साहब कहते हैं- जलसे की सम्पूर्ण व्यवस्था से अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ। प्रत्येक व्यवस्था सम्पूर्ण, नापी तोली हुई और उत्तम है। किसी प्रबन्धन के विषय में यह कहना कठिन है कि इसमें कोई कमी है अथवा त्रूटि है। प्रत्येक कार्य-कर्ता अपनी ड्यूटी में पूरा मग्न तथा मेहमानों के प्रेम में डूबा हुआ है। बैअत के समय एक उल्लास की लहर तथा एक विशेष अनुभूति थी जिसे शब्दों में बयान करना कठिन है। एक विशेष प्रभाव को मेरे दिल ने अनुभव किया, बैअत के समय मेरे रोंगटे खड़े हो गए। ऐसा प्रतीत होता था कि एक चुम्बकीय क्षेत्र बन गया है तथा सब एक आकर्षण एंव परिधि के घेरे में हैं। कहते हैं- यह जलसा मेरे लिए एक सपने से कम न था।

बलग़ारियः से भी बड़ी संख्या में लोग आए थे, 76 लोगों का प्रतिनिधि मंडल था। 25 अहमदी दोस्त थे अन्य सभी ग़ैर अज़-जमाअत थे। डाक्टर, व्यापारी, सेना के रिटायर्ड उच्च अधिकारी थे। टीचर भी थे, पढ़े लिक्खे लोग थे। एक महिला मेहमान मैगडा साहिबा कहने लगीं कि यूरोप के देशों में असंख्य अन्य देशों से शरणार्थी आ रहे हैं और स्थानीय लोग उनसे घृणा करते हैं, एक जटिल समस्या उत्पन्न हो रही है परन्तु ख़लीफ़ः ने इस विषय में जो मार्ग दर्शन किया है वह दिलों को संतोष देने वाला है और समस्त व्याकुलताओं का समाधान है। इसी प्रकार आपने जो पुरुषों और महिलाओं के अधिकारों तथा दायित्वों की ओर ध्यान दिलाया है, मैं उससे बड़ी प्रभावित हुई हूँ।

मालटा से भी एक प्रतिनिधि मंडल आया हुआ था। उसमें एक डाक्टर भी थे, कहते हैं कि जलसे में शामिल होने तथा वर्तमान ख़लीफ़ः के ख़ुत्बे और विशेषतः दूसरे दिन ग़ैर मुस्लिमों से सम्बोधन के बाद मैं यह कह सकता हूँ कि मुझे अपने प्रश्नों के उत्तर मिल गए हैं। कहते हैं कि जिहाद की जो व्याख्या अहमदियः जमाअत करती है उसके विषय में एक किताब प्रकाशित करके मुसलमानों को पढ़ानी चाहिए। इसी प्रकार ग़ैर मुस्लिमों को भी जिहाद की वास्तविकता बतानी चाहिए। कहते हैं कि मालटा के लोगों

को अहमदियत की ख़ूब तबलीग़ करुंगा और उन्हें बताऊँगा कि वास्तविक इस्लाम वही है जो अहमदियत पेश कर रही है।

लाटोयः से आने वाले एक वकील आरवर्ड साहब कहते हैं कि पहली बार जलसा सालाना में सम्मिलित होने का अवसर मिला। मैंने अपने जीवन में आपसे अधिक मुहब्बत करने वाले, सहायता करने वाले और सेवा करने वाले लोग नहीं देखे। जलसा सालाना में उपस्थिति मेरे लिए गौरव की बात है तथा वापस जाकर मैं अपने जीवन के विषय में पुनः विचार करुंगा।

एक महिला मेहमान टीना साहिबा कहती हैं कि जलसा सालाना जर्मनी में महिलाओं के भाषण में महिलाओं के अधिकार और उन पर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उपकारों के विषय में जो सम्बोधन था, उसने मुझे बड़ा प्रभावित किया और अब मैं कह सकती हूँ कि महिलाओं का इस्लाम में कितना महत्त्व है।

बैल्जियम से आने वाले एक ग़ैर अहमदी मेहमान जो सेनेगाल के निवासी हैं, कहते हैं कि जो प्रबन्ध यहाँ देखा और कहीं नज़र नहीं आया। अहमदियः जमाअत ही आज के दौर में इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार काम करती नज़र आती है। लिथोवेनियः से आने वाली एक मेहमान कहती हैं कि मैंने इन दिनों में इस्लाम के विषय में बहुत कुछ सीखा है। जानकारी प्राप्त हुई है कि इस्लाम बन्दों के अधिकारों की अदायगी की ओर विशेष ध्यान देता है। मैं वापस जाकर इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम दूसरों तक पहुंचाऊँगी। जलसे में शामिल होकर मैं अपने भीतर एक बड़ा बदलाव अनुभव कर रही हूँ।

फिर एक मेहमान, मिस्टर अराल्डो जो एकाउन्टैंट हैं कहते हैं कि जलसा सालाना ने मुसलमानों की मुहब्बत मेरे दिल में पैदा की है। मुसलमान अमन चाहते हैं, जंग नहीं। ISIS इस्लाम का वास्तविक चित्र पेश नहीं करती।

जलसे के दिनों में जहाँ हम जलसे की बरकतों से लाभान्वित होते हैं तथा अपने प्रशिक्षण और अन्य लोगों में तबलीग़ का कारण बनते हैं वहीं हमें अपनी ग़ल्तियों पर भी नज़र रखनी चाहिए। मुझे यह ज़रुरत नहीं कि हर बार मैं अनेक दुर्बलताओं का वर्णन करूँ अथवा उनको चिन्हित करूँ परन्तु यह निश्चित बात है कि ग़ल्तियाँ और त्रूटियाँ होती हैं। कोई व्यवस्था भी कभी सम्पूर्ण व्यवस्था नहीं हो सकती। जहाँ हम अल्लाह तआला के आभारी हैं कि उसने हमारी दुर्बलताओं को छिपाया, वहीं हमें अपने निरीक्षण भी करने चाहिएँ। व्यवस्था करने वालों को कमियों और त्रूटियों को परीक्षण की दृष्टि से देखना चाहिए। उनको खोजें कि कहाँ कहाँ हमारी त्रूटियाँ थीं और लाल किताब बनाएँ जिसमें त्रूटियों का लेखा जोखा हो और भविष्य में उन्हें दूर करने का प्रयास करें। इसी प्रकार हमारे निज़ाम में सुन्दरता उत्पन्न हो सकती है। अफ़सर जलसा सालाना का काम है कि बाद में अपने समस्त विभागों की मीटिंग करें तथा उन्हें कहें कि अपने अपने विभागों की त्रूटियों को नोट करके लाएँ। जहाँ जहाँ उनको कोई ग़लती नज़र आए, उसे नोट करके लाएँ ताकि आपस के विचार विमर्श के द्वारा उनका सुन्दर समाधान निकाला जाए। अगले वर्ष उत्तम प्रबन्ध हो और यदि लोगों की ओर कोई सुधार योग्य अथवा ध्यान देने योग्य बात सामने आए तो तुरन्त खुले दिल से उस शिकायत को दूर करने के लिए भविष्य में सुन्दर योजना होनी चाहिए। अल्लाह तआला इसकी भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए सबको।

इस दौरे के बीच मुझे कुछ मस्जिदों की आधार शिला रखने तथा उद्घाटन का भी अवसर मिला। यह भी तबलीग़ का माध्यम बनता है। ग़ैर मेहमान आकर जब इस्लाम के विषय में जानकारी प्राप्त करते हैं तो उनके लिए बड़ी विचित्र बात होती है कि इस्लाम की शिक्षा का यह दृष्टि कोण तो हमें पहले कभी नहीं दिखाया गया। इस समय इस विषय पर भी कुछ अनुभव पेश कर देता हूँ।

एक मस्जिद के उदघाटन पर एक हिस्पानवी ईसाई हैं, कहते हैं कि मेरा बेटा कुछ वर्ष पूर्व अहमदी हो गया जिसके कारण मुझे बड़ी दुविधा हुई। क्यूँकि मैं एक कैथोलिक ईसाई हूँ और अपने धर्म का बड़ा पाबन्द हूँ। मुझे खेद था कि मेरा बेटा किस स्थान पर पहुंच गया है तथा इस्लाम को मैं हानि कारक जानता हूँ। इस प्रकार आज आपके ख़लीफ़ः को मैंने देखा तथा उनकी बातें सुनीं और मुझे एक वास्तविक शांति की अनुभूति हुई। अब मुझे इस बात का संतोष है कि मेरा बेटा भी अच्छे स्थान पर है।

फिर एक महिला मेहमान थीं केरोला साहिबा, कहती हैं- मुझे कुछ बुरा भी लगा और अप्रसन्नता भी हुई कि आपके ख़लीफ़ः को बार बार कहना पड़ा कि इस्लाम अमन का धर्म है। परन्तु मैं समझ सकती हूँ कि दुनया में आजकल जो इस्लाम के विषय में अनुचित प्रचार हो रहा है तथा इतनी अप्रिय बातें इस्लाम से सम्बंधित की जाती हैं तो लोगों को समझाने के लिए बार बार

इस बात की अभिव्यक्ति भी आवश्यक है। उन्होंने, कहती हैं कि बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से इस बात को बयान किया कि इस्लाम अमन का प्रचार करने वाला है कोई इसके विरुद्ध प्रमाण नहीं दे सकता, जिस प्रकार बयान किया है, कहती हैं, पैग़ाम बड़ा सरल है कि प्रत्येक को आपस में गले लगाना चाहिए तथा परस्पर मुहब्बत और प्यार से रहना चाहिए। फिर कहती हैं- मुझे अहमदिया मस्जिद से किसी प्रकार की शिकायत नहीं परन्तु एक खेद अवश्य है और इस बात का खेद है कि जबकि मस्जिद और गिरजा का स्तर एक ही है, मस्जिद मुसलमानों की इबादतगाह है और गिरजा ईसाईयों की इबादतगाह है, एक ही स्तर है, तो फिर भी गिरजों को नगर के मध्य में बनाने की अनुमति मिलती है तथा मस्जिदों को नगर से बाहर, और नमाज़ियों को दूर से आना पड़ता है। यह कौन्सल जो है, क्यूँ शहर में मस्जिद बनाने की अनुमति नहीं देती। अब उनमें से स्वयं ऐसे लोग खड़े हो रहे हैं जो पहले मस्जिदों के विरोधी थे अब मस्जिदों का समर्थन करने लगे हैं, इन्हीं आयोजनों के कारण, मस्जिदों के उद्घाटनों के कारण कि हमारी मस्जिदें भी नगरों के भीतर बननी चाहिएँ।

मेयर साहब ने कहा एक स्थान पर कि मुझे बड़ा घमंड था कि मैं आपकी जमाअत को जानता हूँ परन्तु आज मुझे इस्लाम के विषय में तथा विशेष रूप से इस्लाम की सहानुभूति से भरी दुनया भर में सहायता के बारे में, अधिक सीखने को मिला। इस बारे में जो मैंने कुछ बताया था, कहते हैं कि मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई जब ख़लीफ़ः ने कहा कि इस्लाम गिरजों की सुरक्षा की भी शिक्षा देता है तथा अन्य सभी धर्मों के अनुयाइयों की सुरक्षा की भी।

एक मेहमान मिस्टर स्टीफ़न, कहते हैं- आज मैंने इस्लाम के मूल सिद्धांत सीखे हैं।

फिर एक मेहमान महिला कहती हैं कि ख़लीफ़ः का सन्देश सुना, सम्बोधन सुना मैंने पड़ौसियों के संदर्भ में ऐसी शिक्षा, उत्तम शिक्षा कभी नहीं सुनी। यदि प्रत्येक अपने पड़ौसी के अधिकार देना आरम्भ कर दे, जैसा कि आपके ख़लीफ़ः ने कहा है तो यह दुनया शांति का गहवारा बन जाए। कहती हैं कि ख़लीफ़ः ने कहा कि अपने अधिकार की मांग करने की बजाए दूसरों के हक़ अदा करो। निःसन्देह यही अमन की शिक्षा हो सकती है।

फिर एक जर्मन महिला ने कहा, न एक जर्मन पुरुष ने, कि मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आपके ख़लीफ़ः ने पुरुष और महिला के हाथ मिलाने वाले मामले को बड़ी स्पष्टता से बयान किया है। उनका सम्बोधन सुनना मेरे लिए सम्मान जनक था। उनकी युक्तियों को रद्द नहीं किया जा सकता जो उन्होंने दीं। ख़लीफ़ः ने बिल्कुल ठीक कहा है कि एक शांति प्रिय तथा tolerant समाज में हमें एक दूसरे की आस्थाओं का ध्यान रखना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया- एक बात तो हमें याद रखनी चाहिए कि दूसरों के साथ बात चीत में, जब अपने दीन और धर्म तथा प्रथाओं की बात कर रहे हों तो विवेक से काम लेना चाहिए ताकि आपकी बात उनको पहुंच भी जाए और दूसरों की भावनाओं को ठेस भी न लगे।

याद रक्खें कि हमने ज़बरदस्ती किसी को मनवाना नहीं है परन्तु अपनी शिक्षा से पीछे भी नहीं हठना। हमें लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है किसी मामले में। दीन के मामले में इस्लाम की शिक्षा ऐसी उत्तम शिक्षा है कि किसी अहमदी लड़के को, लड़की को, महिला और पुरुष को हीन भावना की आवश्यकता नहीं है। यदि हमने दुनया को इस्लाम के झंडे तले लाना है तो हमें प्रत्येक बात में अपने क्रिया शील नमूने पेश करने होंगे तथा साहस भी दिखाना होगा।

किसी भी प्रकार की हीन भावना में लिप्त हुए बिना अपनी शिक्षा के छोटे से छोटे भाग के अनुसार भी कर्म करें तथा उन लोगों को बताएँ कि यूरोप में आकर भी हमें इस्लाम की शिक्षा की उत्तमता के संदर्भ में तनिक सा भी कोई सन्देह नहीं है। इसी प्रकार लड़कियाँ अपने वस्त्रों तथा अपने पर्दे का भी ध्यान रक्खें और अपनी लज्जा एंव अपनी पवित्रता पर कोई आँच न आने दें। लजना का संगठन इस ओर विशेष ध्यान दे। इसी प्रकार ख़ुद्दामुल अहमदिया का संगठन भी ख़ुद्दाम के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दे। अन्सारुल्लाह को भी अपने दायित्वों से ग़फ़िल नहीं होना चाहिए। समस्त संगठन तथा जमाअती निज़ाम जमाअत के लोगों की क्रिया शील दुर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए अपने अपने तर्बियती प्रोग्राम बनाएँ तथा इसके उत्तम परणिाम प्राप्त करने का प्रयास करें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।